कश्मीर में रह कर लिखी जा रही हिंदी कविता : एक अध्ययन

डॉ. मुदस्सिर अहमद भट्ट

कश्मीर एक अहिन्दी क्षेत्र हैं परन्तु हिंदी के क्षेत्र में सदैव सक्रीय, क्रियाशील एवं कार्यन्वय रहा है। यहाँ तक कि हिंदी की जननी संस्कृत भाषा में भी कश्मीर का अपूर्व एवं अद्भुत योगदान है। प्राचीनकाल से ही कालिदास, कल्हण, भामह, वामन, आनंदवर्धन, अभिनवगुप्त आदि जैसे विद्वानों ने संस्कृत में अपनी छाप छोड़ी है। वास्तविकता यह है कि इनमें से अधिकांश विद्वानों ने भारतीय काव्य-शास्त्र को समृद्ध किया हैं ।

कश्मीर में हिंदी रचनाकारों की भी एक उर्वरक, उच्चारक एवं समृद्ध परम्परा रही हैं फिर चाहे वे उपन्यासकार हो, कहानीकार हो, कविता लिखने वाला हो या किसी अन्य विधा में साहित्य साधना करने वाला । प्रसिद्ध रहस्यवादी कश्मीरी कवयित्री रूपभवानी (17वीं शती) के पदों से ही कश्मीर में रचे जा रहे हिंदी का शुभारम्भ होता है । और यह शुभारम्भ ही समन्वय, सामंजस्य, प्रेम, त्याग, सदाचार की भावना से ओत-प्रोत था । पदमानंद, पृथ्वीनाथ मधूप, लक्ष्मण-जू-बुलबुल, श्री कृष्ण राजदान, ठाकुर जी मनवटी, पं. विष्णु कौल, मोहन निराश, शशिशेखर तोषखानी, डॉ. रतनलाल शांत, डॉ. सोमनाथ कौल, श्याम सौंधी, महाराज कृष्ण 'भरत', डॉ. संतोष जारू, वीणा चन्ना, नीना कौल, कौशल्या चल्लू, सरला कौल, विणा कुमारी, महाराज कृष्ण शाह, अशोक कुमार तिक्कू आदि की एक लंबी परंपरा रही हैं । वर्तमान युग में महाराज कृष्ण संतोषी, अग्निशेखर (कुलदीप सुम्बली), क्षमा कौल, निदा नवाज़, सतीश विमल, डॉ. मुदस्सिर अहमद भट्ट साहित्य कर्म के साथ जुड़े हुए हैं ।

इसमें कोई दोराय नहीं है कि विस्थापन की त्रासदी पश्चात् कश्मीर के रचे जा रहे हिंदी साहित्य पर भी प्रभाव पड़ा और यह प्रभाव इतना प्रभावी था कि घाटी में हिंदी का चलन न होने के बराबर हुआ । कश्मीर से विस्थापित हुए हिंदी साहित्य सेवी भारत के अन्य राज्यों में रहने को विवश थे परन्तु हिंदी के ये सामर्थ, सक्रीय एवं समर्पित साहित्य साधक भावाभिव्यक्ति के अनुपम पुष्पों से हिंदी साहित्य को चार-चाँद लगते रहे । कालांतर में इनकी इस भावाभिव्यक्ति को विस्थापित साहित्य की संज्ञा भी दी गई ।

वर्तमान में घाटी में रहकर रचे जा रहे हिंदी साहित्य में श्री निदा नवाज़ तथा श्री सतीश विमल का नाम उल्लेखनीय है । इन दोनों साहित्य मनीषियों का नाम इसलिए विशेष है क्योंकि इन्होंने कश्मीर में रहकर अर्थात् घाटी की सुलगती आग में स्वयं को जलने दिया तथा समय के प्रहार से अनगिनत अमानवीय तत्त्वों को सहा जिसके परिणामस्वरूप शांतस्वभावी एवं समाजवादी कवियों का जन्म हुआ जिन्होंने आग को आग ही कहा और बर्फ़ को बर्फ़ । इन दोनों कवियों ने काल और काल की परवाह किए बिना अपना कविकर्म बखूबी निभाया । इनके निस्स्वार्थ, निर्भीक एवं समर्पित हिंदी सेवा को देखकर कई नवयुवकों ने भी इस क्षेत्र में हथाज़माई की जिनमें डॉ. मुदस्सिर अहमद भट्ट का नाम लेना भी उचित होगा ।

निदा नवाज़ की वाणी दुःख-दर्द, संत्रास, घुटन, पीड़ा, आंतक आदि के ओतप्रोत हैं । डॉ. ज़ाहिदा जबीन अपने एक शोध आलेख 'कश्मीर के हिंदी कवि : एक अध्ययन' में लिखती हैं- "तूफान से पलायन कर तूफान की अभिव्यक्ति करने वाले अवश्य बहुत है किन्तु तूफान में रहकर, उसे झेलकर, भोग कर, उसके थमने की आशा करने वाले बहुत कम है । निदा जी भी उनमें से एक हैं ।"[1] इसमें कोई संदेह नहीं है कि विकृत परिस्थितियों

में काव्य रचना करना और वो भी सत्य और यथार्थ-परख चुनौतीपूर्ण है किन्तु कवि निदा नवाज़ ने इन चुनौतियों को स्वीकारा तथा सत्य और वास्तविकता को दर्शाने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी । वीभत्स एवं भयावह परिवेश में कवि ने निडर होकर भड़कते हुए शोलों को हवा देने के बजाय पानी देने का भरसक प्रयास किया है । कवि निदा नवाज़ के निडर होकर काव्य-रचना करने की पुष्टि प्रो. ओमप्रकाश गुप्त इन शब्दों में करते हैं- "निदा नवाज़ की कविताएँ एक विस्थापित व्यक्ति के ऐसे उद्गार नहीं हैं, जो अपने घर से बिछुड़े हुए घर को बहार खड़ा देख रहा है । कवि अपने-आपको युद्ध और मौत के ऐन बीच पाता है ।"[2] निदा नवाज़ के काव्य-संग्रह 'अक्षर-अक्षर रक्त भरा' तथा 'बर्फ़ और आग' के अध्ययन उपरान्त यह स्पष्ट हो जाता है कि उन्होंने आतंक, युद्ध, गोलाबारी, कट्टरधर्मिता, संकीर्ण मानसिकता के प्रति मानवता, शांति, प्रेम, आशा, सदाचार का संचार किया हैं । 'खुश रंग परिंदे' कविता से निम्नलिखित पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं-

"उन्होंने अपने युद्ध को
मेरे आँगन में
लड़ने की ठान ली है
और मेरी हरियाली के
खुशरंग परिंदों का एक काफ़िला
रेगिस्तानों की तरफ
बेनाम रास्तों पर
कूच कर गया है ।"[3]

कवि निदा नवाज़ के काव्य में निस्संदेह विषय-वैविध्य है, यद्यपि उनकी अनेक कविताएँ कश्मीर की प्रष्ठिभूमि से ही उपजी है, और वे सभी

कविताएँ घाटी में चल रहे भीषण कुचक्रों एवं कुनीतियों पर प्रश्न चिह्न खड़ा करता हैं । अपने और अपने हमवतनों के दुःख-दर्द को कवि ने अत्यंत संवेदनशीलता ढंग से मार्मिक अभिव्यक्ति दी है । विकृत परिवेश में भी कवि संयम और समन्वय के ख्वाब देखता है-

"मैं पालूंगा एक सपना
जिसमें होगी एक पूरी सृष्टि
एक सुन्दर शहर
जहाँ अभी तक
नहीं तराशा गया होगा कोई ईश्वर
न ही जानते होंगे लोग झुकना
न ही टेढ़ी हो गई होंगी उनकी रीढ़ की हड्डियाँ ।"[4]

यह कविता वास्तव में यहाँ पूरी दर्ज की जानी चाहिए क्योंकि इस कविता का एक-एक शब्द अपने आप में कविता है जो वर्तमान जीवन की विसंगतियों एवं विडम्बनाओं को अपने भीतर जज़्ब किए हुए पाठक को बार-बार पढ़ने एवं इस कविता पर सोचने के लिए विवश करती है । इस कविता की कुछ पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं-

"मेरे सपने में
ईजाद नहीं हुईं होंगी
तिजोरियां
और न ही जंजीरें ...
जहाँ तिजोरियाँ नहीं होतीं
वहां नहीं होती भूख

जहाँ ताले नहीं होते
वहां नहीं होते चोर

जहाँ मालिक नहीं होते

वहां नहीं होतीं जंजीरें ।"[5]

कठोर एवं क्रूर परिवेश में जहाँ कवि निदा नवाज़ को अपने प्राणों की रक्षा में चिंतित होना चाहिए था वहाँ सत्य और यथार्थ को उसके वास्तविक रूप में कवि के निडर होकर प्रस्तुत करने का अपना कर्तव्य निभाया है जिसका खामियाज़ा कवि को समय-समय पर भुगतना पड़ा है । वास्तव में निदा नवाज़ का काव्य 'तल्ख़ हकीकतों से साक्षात्कार करता काव्य' है. 'महाप्रलय' कविता की यह पंक्तियाँ देखिए-

" मैं देख लेता हूँ

अपने की रक्षक की आँखों में

उमड़ आई

जनरल दायर की सी क्रूरता

... मैं खोज लेता हूँ

रानेताओं की

सफ़ेद पोशाक के पीछे छुपे

देश के दलाल ।"[6]

कवि की वेदना इन पंक्तियों में और प्रखर हो जाती है जब वे कहते हैं-

"मैं उस स्वर्ग में रहता हूँ

जहाँ मशकूक होना ही होता है

मर जाना

जहाँ घरों से निकलना ही होता है

ग़ायब हो जाना

जहाँ हर ऊँचा होता सिर

महाराजा के आदेश पर

काट लिया जाता है ।"[7]

स्वर्ग कहलाये जाने वाले कश्मीर की वास्तविकता इस कविता में माध्यम से स्पष्ट हो जाती हैं-

"मैं उस स्वर्ग में रहता हूँ
जहाँ बच्चा होना होता है सहम जाना
जवान होना होता है मर जाना
औरत होना होता है लुट जाना
और बूढा होना होता है
अपने ही संतान का
कब्रिस्तान हो जाना । " [8]

श्री सतीश विमल भी कश्मीर में रचे जा रहे हिंदी काव्य के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं । सतीश जी न केवल हिंदी में लिखते है अपितु कश्मीरी और उर्दू भाषाओं में भी अपनी छाप छोड़ चुके है । कुल मिलाकर अब तक उनकी 14 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं । 'कालसूर्य', विनाश का विजयता', ठूंठ की छाया, 'निःशब्द चीख के शिखर पर' हिंदी की काव्य-रचनाएँ हैं । इसमें कोई संदेह नहीं कि आपकी अनेक कविताओं के माध्यम से कश्मीर में व्याप्त हिंसा, आंतक, विश्वासघात, पलायन, दुःख-दर्द, संत्रास, घुटन की अभिव्यक्ति हुई है । यह करुण अभिव्यक्ति अकारण नहीं है, वार-जोन अर्थात् युद्ध क्षेत्र में जीने-मरने वाले लोगों से इस प्रकार की अभिव्यक्ति स्वाभाविक ही देखे जा सकती है ।

कश्मीर की भयंकर एवं विभस्त परिस्थितियों में भी कवि सतीश विमल जी के काव्य में आशा की सुनहरी किरण सदैव दिखाई पड़ती है । 'फसल' कविता की यह पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं-

"दृष्टि के खलिहानों में से

आशाओं की झाड़ियाँ

और अनुभव के कांटे

उखाड़ फेकने होंगें

कभी हम

अपने आगे

सूर्य की लहलहाती फसल को

पा सकेंगें ।"[9]

कवि वर्तमान समय की आतंरिक विसंगतियों तथा बाहरी जीवन के पाखंडों पर सटीक चोट करते है । सत्तालोलुपता की आड़ में हिंसा एवं दंगे, अवसरवादिता की आड़ में चाटुकारिता, धार्मिक पाखंडों के आड़ में कट्टर्धर्मिता के उदाहरण इन पंक्तियों में देखिए-

"दंगों की फसल काटते-काटते

हमारे हाथों से भी बहा

बहुत सारा रक्त

और फट गया बहुत कुछ

भीतर-बाहर ।"[10]

इसमें कोई संदेह नहीं है कि कश्मीर पर अथवा कश्मीरियों द्वारा रचे जा रहे साहित्य में राजनीति का लाज़मी चित्रण देखा जा सकता है । सतीश विमल जी की कविताएँ भी इससे अछूती नहीं रहीं है । कवि का मानना है कि राजनीति ने मानव जीवन को विकृत एवं विद्रूप कर दिया है जिससे मानवता शर्मसार हो चुकी है क्योंकि वर्तमान राजनीति अवसरवादिता, पदलोलुपता, भ्रष्टाचार, हिंसा, गुंडागर्दी की पीड़ा से ग्रस्त हो चुकी है । 'ठूँठ की छाया' कविता संग्रह से ये पंक्तियाँ देखिए-

"जिन मिथकों के दरीचों से

यथार्थ के साम्राज्य को जाने वाली

पगडंडियाँ मिलती थीं

उन मिथकों के चहरों पर पोती गयी कालिख ।

और पोंछे गए हाथ

उन श्वेत पताकाओं से

जो दंगों की फसल काटते-काटते

हमने लहराईं थीं

दृष्टि के ऊँचे स्तम्बों पर ।"[11]

वास्तव में कवि सतीश विमल दार्शनिक मानस-पटल की कविताएँ रचते हैं परन्तु वास्तविकता और यथार्थ से भी कवि ने कभी मुँह नहीं मोड़ा है । वे धैर्य एवं साहस में विश्वास रखने वाले कवि है । 'सम्राट सुलेमान और मधुमक्खियाँ' नामक कविता से यह पंक्तियाँ देखिए-

"हम सूखे पेड़ों के नीचे
सजाये बैठे हैं दिव्य-मंत्रों की
सजे-जिल्दों वाली पोथियाँ
कि नये पत्ते निकल आयें
नये फूल खिलें
पर पोथियाँ मधुमक्खियों का बदल नहीं हो पातीं ।"[12]

कवि सतीश विमल के काव्य-संग्रह 'कालसूर्य' में संकलित अनेक कविताएँ स्थूल परिस्थितियों को सूक्ष्म धरातल पर पंहुचा देती है जिससे अप्रत्यक्ष प्रत्यक्ष एवं साकार हो उठता है । गंभीरता से विचार करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि दार्शनिकता एवं सूफी-मिज़ाज़ के अतिरिक्त विमल जी की कविताएँ कश्मीर की जटिल एवं गंभीर परिस्थितियों में सामंजस्य तथा समन्वय का मार्ग लिए हुए है । कवि कहते हैं-

"मेरे भीतर

एक मकड़ा निरंतर बुन रहा है जाल

और मैं बाहर

बीजों में से अंकुरित हो रहा हूँ ।"[13]

विमल जी आशावादी कवि हैं जो अशांति में शांति, अनास्था में आस्था को संचार करते है । 'खूंटी' नामक कविता की निम्न पंक्तियाँ देखिये-

"खूंटियों से बाँध रहा हूँ
जगत की असुरक्षा
सुरक्षित कर रहा हूँ सब को ।"[14]

घाटी में लिखी जा रही हिंदी कविता के क्षेत्र में मुदस्सिर अहमद भट्ट का नाम लिया जाना भी उचित है जिनका प्रथम काव्य-संग्रह 'स्वर्ग-विराग' २०१६ में प्रकाशित हुआ है । यह कविता संग्रह चन्द्रलोक प्रकाशन कानपुर से प्रकाशित हुआ है । १०४ पृष्ठों के इस संग्रह में ६१ कविताएँ हैं, प्रत्येक कविता अपना अलग भाव लिये हुए है; किसी में अंतर्मन की पीड़ा है तो कहीं आशा- निराशा की छटपटात, कहीं आतंक की गहराती काली रात तो कहीं शान्ति में खिलती भौर ।

इस कृति में प्रस्तुत कविताएँ कश्मीर के वास्तविक दर्द को दर्शाती हैं । इसमें समाज, विशेष रूप से कश्मीरी समाज में व्याप्त विभिन्न विसंगतियों, विडम्बनाओं के प्रति एक जागरुक एवं संवेदनशील दृष्टी का निर्वाह किया है । मुदस्सिर ने घाटी के राजनीतिक परिवेश को देखा, समझा और बखूबी से अपने काव्य संग्रह में उसको चित्रित किया है । राजनीति और प्रशासन तंत्र पर कटाक्ष कश्मीर के ही कवि नहीं बल्कि पूरे भारत के कविवर, साहित्यकार, बुद्धिजीवी करते आए हैं । एक सामान्य कश्मीरी जो एक लम्बे समय से राजनीति की आग में झुलस रहा है उसका चित्रण भी इस काव्य संग्रह में किया गया है । वास्तव में इस काव्य संग्रह 'स्वर्ग विराग' का मुख्य विषय राजनीति एवं शोषण तंत्रों का

पर्दाफाश करना रहा है । 'स्वर्ग विराग एक सामान्य कश्मीरी के दुःख, पीड़ा, संत्रास, भय, आतंक, समर्पण, पलायन, बेबसी, विरोध एवं संघर्ष आदि का चित्रण मात्र ही नहीं वरन कश्मीर में हो रहे शोषण, अनाचार, अत्याचार, भ्रष्टाचार आदि का जीवन्त दस्तावेज है । मुदस्सिर ने राजनीति के चुंगल में फंसे एक सामान्य कश्मीरी का यथार्थ चित्रण बेखोफ होकर 'मशाल' नामक कविता में इस प्रकार किया गया है-

"यह भारत का सिरमोर/ जहाँ हावी है /लोक पर तंत्र.

यहाँ गरीबों, निरक्षरों/ बेरोज़गारों व असहायों पर

अभियोग है- संगबाज़ी के/ अलगाववादी के /और आतंकवादी के,

इस आसमान निष्ठुर/ दुर्दशा की स्थिति में

सत्ताधारी तिजोरियों को तोलते हैं ।"[15]

मुदस्सिर की कविताएँ कश्मीर के उस दर्द को सामने लाती हैं जिस ने यहाँ की पीढ़ी दर पीढ़ी को अविश्वसनीय बनाकर उनके भविष्य को अंधकार में धकेल दिया है । अपनी निर्दोषिता को प्रमाणित करने के लिए भी उन्हें कविता का सहारा लेना पड़ा है । उदहारण -

"हाँ, यह जानता हूँ/ निर्दोष हूँ

निर्धन युवा की तरह/ जिसे अक्सर

नकारा जाता है/ नौकरी में /धनवान को देखते हुए ।

हाँ यह जानता हूँ / निर्दोष हूँ उस कन्या की तरह

जिसे अक्सर/ नष्ट कर दिया जाता है

गर्भ में/ लड़के को देखते हुए ।"[16]

कश्मीर जहाँ विश्व में एक 'स्वर्ग' स्थल के रूप में पहचाना जाता है । यहाँ का जलवायु, पर्यावरण, प्राकृतिक सुन्दरता आदि को दृष्टि में रखकर कई रचनाएँ लिखी जा सकती हैं और लिखी गई हैं परन्तु मुदस्सिर की रचनाएँ विपरीत दिखाई देती हैं । यद्यपि इन्होंने विभिन्न प्राकृतिक बिम्बों, प्रतीकों का प्रयोग तो किया है परंतु उन प्रतीकों और बिम्बों के प्रयोग ने भी विभिन्न प्रकार के शोषण तंत्रों का पर्दाफाश ही किया है । 'चिनार और पौधा' कविता की ये पंक्तियाँ देखिए-

"सिखाया जाता है / चिनार की छाया में / जलकर कोयला होना

और फिर तप कर / आग उगलना / उनके प्रति जो

नहीं है चिनार / जो महज़ पौधे हैं / धरती से चिपके हुए ।"[17]

इस कृति की कविताओं में एक प्रवाह है, सरल और बोधगम्य रूप में प्रस्तुत संवेदना के विभिन्न पहलुओं को पाठकों के सम्मुख रखकर मानो मुदस्सिर चिंता मुक्त होना चाहते हैं । उन्होंने जो भोगा, देखा और अनुभव किया है मानो वह उसका अनुभव पाठकों को भी कराना चाहते हैं । मुदस्सिर जी का काव्य संग्रह 'स्वर्ग विराग' कश्मीर की वास्तविक परिस्थियों से अवगत करा रहा है । इस कृति का प्रधान लक्ष्य है, सच को सच कहना और झूठ को झूठ, शोषण को शोषण दर्शाना और न्याय को न्याय । इस संग्रह में उस सच के दर्शन होते है जिस सच को जन संचार माध्यमों के सदैव अनदेखा किया है ।

निष्कर्षतः कश्मीर घाटी के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर निदा नवाज़ और सतीश विमल का काव्य समन्वय, समायोजन और साहस के साथ अपना सन्देश प्रेषित करता है ताकि अव्यवस्थाओं की घाटी में सुव्यवस्था, अस्थिरता के पतझड़ में स्थिरता की हरियाली, अनिश्चितता के शिखर पर

निश्चिता, अशांति के स्थान पर शांति का संचार हो । कश्मीर घाटी में रचे जा रहे हिंदी साहित्य में इन दोनों कवियों का महत्त्व स्थान हैं। इसके साथ-साथ मुदस्सिर अहमद भट्ट के साहित्य-कर्म को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता हैं। घाटी में रह कर पिछले 25-30 वर्षों से इन दोनों कवियों की लेखनी निरंतर हिंदी साहित्य को समृद्ध करती रही हैं ।

सन्दर्भ-

1. सं*कश्मीर "*,त्रैमासिक हिंदी पत्रिका ,वांड्मय ,फ़िरोज़ अहमद .एम .डॉ .

"एक अध्ययन : के हिंसी कवि पृष्ठ 63 .

2. वही63 .पृष्ठ ,

3. निदा नवाज़' ,बर्फ़ और आग100 .पृष्ठ '

4. वही15 .पृष्ठ ,

5. वही15 .पृष्ठ ,

6. वही43 .पृष्ठ ,

7. निदा नवाज़' ,अँधेरे की पाज़ेब119 .पृष्ठ '

8. वही121 .पृष्ठ ,

9. निदा नवाज़' ,बर्फ़ और आग80 .पृष्ठ '

10.सतीश विमल79 .पृष्ठ 'ठूंठ की छाया ,

11.वही 63-62 .पृष्ठ ,

12.सतीश विमल ,'निःशब्द चीख के शिखर पर ,पृष्ठ 90 .

13.सतीश विमल 21 .पृष्ठ ,कालसूर्य ,

14.वही 27 .पृष्ठ ,

15.मुदस्सिर अहमद भट्ट, पृष्ठ 31 .

16.वही, पृष्ठ26 .

17.वही, पृष्ठ58 .